7. खरपतवार नियंत्रण	• पेंडिमैथेलिन नामक खरपतवारनाशी की 400 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ की दर से बीजाई के 0–3 दिनों के अन्दर प्रयोग करना चाहिए। • चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए: 2,4–D नामक दवा की 200ग्राम / एकड़ अथवा मेट्स्ल्फुरोन 1.6ग्राम /एकड़ या कारफेंट्राजोन 8 ग्राम/एकड़ नामक दवा को 120 लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव किया जा सकता है। • संकरी पत्ती या घासों के नियंत्रण के लिए क्लोडिनाफोप 24 ग्राम या फेनोक्षाप्रोप 40ग्राम/ एकड़ स्ल्फोस्ल्फुरोन की 10 ग्राम / एकड़ मात्रा का प्रयोग करना चाहिए। मिश्रित खरपतवारो के नियंत्रण के लिए 2,4–डी अथवा मेट्स्ल्फुरोन को स्ल्फोस्ल्फुरोन या आईसोप्रोट्युरोन के साथ बुआई के 30–35 दिनो बाद मिट्टी में पर्याप्त नमी की अवस्था पर छिड़काव किया जाना चाहिए।
8. वृद्धि नियंत्रक	• अगेती बुवाई व 150% एन पी के के प्रयोग करने पर वृद्धि नियंत्रकों (क्लोरमाक्वेट क्लोराइड (CCC) / @0.2%) + टेबुकोनाजोल 250 ईसी / 0.1% का दो बार छिड़काव (तने की पहली गांठ बनने पर और फ्लैग लीफ आने के समय) करने से इस किस्म को गिरने से बचाया जा सकता है। • वृद्धि नियंत्रकों की 200 लीटर पानी में 400 मिलीलीटर क्लोरमाक्वेट क्लोराइड + 200 मिलीलीटर टेबुकोनाजोल (वाणिज्यिक उत्पाद मात्रा टैंक मिक्स) प्रति एकड़ मात्रा का प्रयोग दो बार करें।
9. रोग एवं कीट नियंत्रण	• माहू या चेपा नमक कीट के नियंत्रण के लिए इमिडाकलोपरिड 17.8 SL की 40 मिली / एकड़ मात्रा का छिड़काव कर सकते हैं। • दीमक के प्रभावी नियंत्रण के लिए खेत की तैयारी के दौरान रेत के साथ फिप्रोनिल 0.3 जी आर 10 किलो प्रति एकड़ की सिफारिश की जाती है।
10. सिंचाई	इस क्षेत्र की गेहूँ की फसल को सामान्यत: 5 से 6 सिंचाई की आवश्कता होती है, जिसमें पहली सिंचाई बुवाई के 20–25 दिन बाद तथा उसके बाद उपलब्ध नमी के आधार पर 25–35 दिनो के अंतराल पर करनी चाहिए।
11. कटाई	गेहूँ की बालियां के पकने की अवस्था में फसल की कटाई करें तथा भंडारण से पहले अनाज को अच्छी तरह से सुखाया जाना चाहिए।

डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक
भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल, 132001 भारत

किसान सहायता नम्बर (टोल फ्री)
1800 180 1891

डी बी डब्ल्यू 187 (करण वंदना)

उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के लिए गेहूँ की नवीनतम किस्म

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर डिवीजन को छोड़कर), पश्चिमी उत्तरप्रदेश (झांसी डिवीजन को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर (जम्मू और कठुआ जिले), हिमाचल प्रदेश (ऊना जिला और पांवटा घाटी) और उत्तराखंड (तराईक्षेत्र)

संकलन एवं सम्पादन

हनीफ खान, ओम प्रकाश, सतीश कुमार, चन्द्रनाथ मिश्रा, विकास गुप्ता, ममृथा एच एम, पूनम जसरोटिया, एस सी भारद्वाज, पी एल कश्यप, ओ पी गंगवार, राज कुमार, मदन लाल, ज्ञानेन्द्र सिंह, रवीश चतरथ एवं ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान
करनाल, 132001 भारत
ICAR-Indian Institute of Wheat & Barley Research
Karnal-132001 INDIA

जलवायु एवं क्षेत्र की उपयुक्तता

डी बी डब्ल्यू 187 की फसल

डी बी डब्ल्यू 187 के दाने

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गेहूँ एवँ जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा विकसित गेहूं की किस्म डी बी डब्ल्यू 187 को देश के उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के सिंचित क्षेत्र में अगेती व समय से बुआई वाली दशाओं के लिए अधिसूचित किया गया है। इसमें प्रमुखतया पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर डिवीजन को छोड़कर), पश्चिमी उत्तरप्रदेश (झांसी डिवीजन को छोड़कर), जम्मू–कश्मीर (जम्मू और कठुआ जिले), हिमाचल प्रदेश (ऊना जिला और पांवटा घाटी), उत्तराखंड (तराई क्षेत्र) के कुछ हिस्सों को शामिल किया गया है।

डी बी डब्ल्यू 187 की उपज का आंकलन

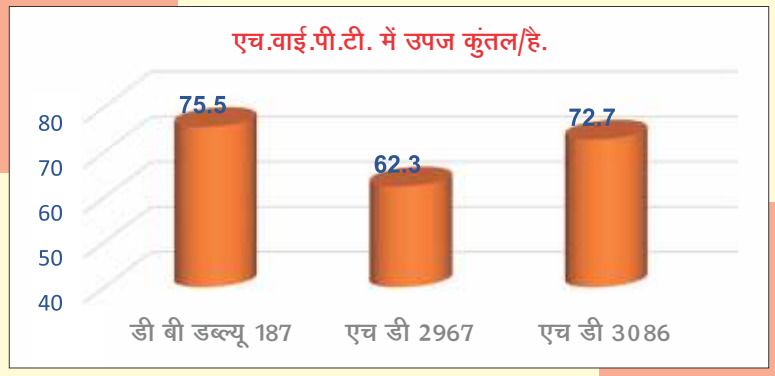

- अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के परीक्षणों में डी बी डब्ल्यू 187 की औसत उपज 75.2 कुंतल / है. पायी गयी है जो की प्रचलित किस्मों एच डी 2967 एवं एच डी 3086 के मुकाबले क्रमशः 21.2% व 3.85% अधिक है। इस प्रजाति की अधिकतम उत्पादन क्षमता 96.6 कुंतल /है. पायी गयी है।
- सिंचित व समय से बुवाई वाली दशा में इस किस्म की औसत पैदावार 61.3 कुंतल / है. पायी गयी है।
- डी बी डब्ल्यू 187 की पूरे पूरे उत्तरी मैदानी क्षेत्र में पैदावार की अच्छी स्थिरता पायी गयी है और अधिक उर्वरकों और वृद्धि नियंत्रकों के प्रयोग द्वारा और अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं।
- साथ ही साथ देर से बुवाई करने पर भी इस किस्म की उत्पातदन क्षमता गर्मी सहनशीलता के कारण अन्य किस्मों की तुलना में अधिक पायी गयी है।

रोगप्रतिरोधिता

यह किस्म पीला व भूरा रतुआ की सभी प्रमुख रोगजनक प्रकारो के लिए प्रतिरोधक क्षमता के साथ साथ गेहूँ ब्लास्ट रोग के प्रति भी रोधी पाई गयी है।

दानों की गुणवत्ता

- डी बी डब्ल्यू 187 में अच्छी चपाती गुणवत्ता (7.6), अच्छा ब्रेड गुणवत्ता स्कोर (7.4) एवं बिस्कुट फैलाव गुणांक 6.7 सेमी विभिन्न कारण यह किस्म गेहूं के कई उत्पादों के लिए एक उपयुक्त किस्म है।
- इस किस्म के दानों में उच्च प्रोटीन मात्रा (12.0%) है तथा प्रोटीन की प्रकार ग्लू 10 के परिपूर्ण स्कोर का समावेश होने के कारण इसमें निर्मित उत्पाद गुणवत्ता पूर्ण बनते हैं।

उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के लिए डी बी डब्ल्यू 187 (करण वंदना) की प्रमुख विशेषताएं

विशेषता	अगेती बुवाई	समय से बुवाई
बाली निकलने की अवधि (दिन)	103	98
पकने की अवधि (दिन)	158	146
पौधो की ऊंचाई (सेमी)	100	103
1000 दानों का वजन (ग्राम)	47	45

डी बी डब्ल्यू 187 (करण वंदना) की उत्पादन पद्धति

1.	जलवायु एवं क्षेत्र की उपयुक्ता	यह प्रजाति उत्तर पश्चिमी भारत के मैदानी क्षेत्र के सिंचित अवस्था में अगेती व समय से बुआई के लिए उपयुक्त है।
2.	भूमि का चुनाव एवं तैयारी	समतल उपजाऊ खेत में उपयुक्त नमी होने पर खेत की तैयारी करके बुवाई करें।
3.	बीज उपचार	गेहूँ के कंडुवा रोग से बचने के लिए वीटावैक्स (कार्बोक्सिन 37.5% थीरम 37.5%) / 2–3 ग्राम / किग्रा बीज से उपचरित करना चाहिए।
4.	बुआई का समय	25 अक्टूबर – 05 नवंबर
5.	बीज दर और अंतराल	100 किग्रा बीज / हैक्टर का इस्तेमाल करके पंक्तियों के बीच 20 सेमी की दूरी के साथ बुवाई की जानी चाहिए।
6.	उर्वरको की मात्रा एवं उपयोग का समय	उर्वरको का उपयोग मिट्टी परीक्षण पर आधारित होना चाहिए। उच्च उर्वरता वाली भूमि के लिए – एनः 150, पीः 60, केः 40 किलोग्राम / हेक्टेयर। जिसमें फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन मात्रा का) भाग बुवाई के समय तथा नत्रजन का 1/4 भाग पहली सिंचाई के बाद तथा शेष (मात्रा दूसरी सिंचाई के पूर्व करें। किस्म की पूर्ण उपज क्षमता को साकार करने के लिए, 150% एन पी के और वृद्धि नियंत्रकों के साथ 15 टन / है. देशी खाद के प्रयोग की सिफारिश की जाती है।